दादावाद

Dadaism

यह आधुनिक सभी वादो मे सबसे अधिक घृणित और असहनीय है। इसके जन्म के लिए उत्तरदायी कुछ तो हमारे पूर्व वादहै और कुछ परिस्थितियां- प्रथम विश्वयुद्ध से मानव-समाज मे कटुता व निराशा का वातावरण फैल गया था व आंधी-ग्रस्त पाश्चात्य समाज की विनाशक परिस्थिति के अगतिक होकर उपहास के साथ - किये स्वीकार मे दादावाद का जन्म हुआ।

यह किन्ही कलासंबधी सिद्धांतो को प्रस्थापित करने के विचार से किया आंदोलन नही था। वह जीवन, कला व दर्शन के प्रति अराजक विचारो का दृष्टिकोण था

दादा कलाकारो ने विश्वयुद्ध मे न केवल प्रचलित सौंदर्यकल्पना के अंत को देखा बल्कि युद्ध की भीषणता से उनका धर्म, नीतित सामाजिक मूल्यो पर विश्वास नही रहा जो उनके विचार से मानवता को अन्याय व संहार से बचाने मे असमर्थ रहे।

यूरपीय साहित्यिको व कलाकारो के मन मे ठनी कि सब संसार अर्थहीन है व इसी विचार को सत्य मानकर उसकी अभिव्यक्ति के लिये वे नये ढंग के केवल कलाविरोधी प्रदर्शनी करने को उद्यत हुए। उनकी प्रदर्शनीयो मे पुराने चित्र, फोटो, टूटी फूटी चीजे

वगैरह सब तरह की रद्दी सामान रखा जाता व उन पर अनोखा शीर्षक लिखा जाता - जैसे टूटे बरतन पुरानी घड़ियाँ, पुराने फोटो टूटी फूटी चीजें वगैरह।

दादावाद का जन्म 1916 में ज्यूरिच के 'काबारे वोल्तेर' में हुआ - इस का नामकरण भी अनोखे ढंग से हुआ। जर्मन-फ्रेंच शब्दकोश को चाकू से खोला गया जो शब्द पहले दिखायी दिया वह था दादा (झूलने वाला लकड़ी का घोड़ा) बस, उसी नाम से आन्दोलन का प्रसिद्धि करण किया गया

दादावादी आन्दोलन के प्रमुख कर्णधार थे जारा, आर्प, बॉल तथा हलसनबेक आदि दादावादी कृति कविताएं लिखते समय भी गाते थे। युद्ध के समय तथा युद्धोत्तर काल में यूरोप के बड़े राजनीतिज्ञों ने जो खोखली घोषणाएं की थीं उनको पैराडी बनाकर दादावादी कलाकार समाज को गुंजाते रहे - उन्होंने क्रियों विरोध किया। इस वाद का सबसे अधिक महत्व यही है कि इन्होंने जीवन को अत्यधिक कोमलता, बनावट, दिखावे तथा ढोंग को विरोध किया और इसी प्रकार कला में भी बनावटी-पन के अनुशासन को नहीं माना

समय पाकर दादावाद ने ही अतियथार्थ वाद को जन्म दिया -

दादा के कलाकारों में आर्प, पालक्ली तथा जार्ज ग्रोज आदि थे पिकासो ने इसवाद में कार्य किया - 1916 ई में पिकासो ने उन्मुक्त रूप से दादावादी प्रवृत्ति का प्रयोग किया।

आर्प और अर्न्स्ट माक्स मुख्य कलाकार है।

आर्प - का जन्म 1887 में हुआ इस वाद का प्रमुख चित्रकार होते हुए भी

(1) यह अतियथार्थ वाद में भी कार्य करता था आर्प के कनवास पर बनी आकृतियां कठोर और काष्ठवत् दिखाई देती है। इस प्रकार की कठोरता वह रंगों द्वारा उत्पन्न करता था, जानबूझ कर उपहास उडाने के लिये कलात्मक सौन्दर्य को बिगाडने के लिये वह ऐसी वस्तुओं का संकलन कनवास पर करता है कि जिससे उस चित्र का अस्तित्व तो समाप्त हो ही जाता है, परन्तु अभीष्ट कला विरोधी भावना को बल अवश्य मिलता है

(2) अर्न्स्ट माक्स (जन्म - 1891) की शैली के द्वारा दो लक्षणों का उद्घाटन हुआ वह है कोलाज और फ्रोताज। कोलाज का अर्थ - चिपकाना, फ्रोताज का अर्थ रगड़ना इन अर्थों में ही इनके द्वारा कृतियों ने जन्म पाया है

Scanned with CamScanner

③ पिकाबिया के दादावाद मे शामिल होने से दादा चित्रों को एक निजी शैली विकसित होने लगी। पिकाबिया ने दादा कलाकारो को मार्सेलदुशां को चित्रों संबंधी कल्पनाओं से परिचित कराया. जिस समय ज्यूरिच मे दादावाद फैल रहा था न्यूयार्क मे कलाकार मंडल 'दादा' के समान प्रयोगो मे व्यस्त था। उसके प्रणेता थे मार्सेल दुशां व फ्रांसिस पिकाबिया।

कुछ सालो तक दादा साहित्य व कला का घनिष्ट संबंध रहा था

पिकासो व ग्रोत्स जैसे विचारक कलाकार भी दादावाद की ओर आकर्षित हुए थे किंतु कुछ समय मे होव स्वतन्त्र विचार से स्थायी महत्व की कलाकृतियो का निर्माण करने लगे। आर्प व मार्क्स एर्न्स्ट जैसे बुद्धिमान चित्रकार अपने दृष्टिकोणो को सुनिश्चित रूप देने मे व्यस्त हो गये एवं कला का अंत करने के उद्देश्य से जन्मे दादा का अंत हुआ

दादा का परमोत्कर्ष उसकी 1920 मे पेरिस मे हुई प्रदर्शनी मे देखने को मिला, इसमे मूर्ति, कविसम्मेलन संगीतसमारोह का आयोजन किया गया सभी दादा के अनुसार हँसी मजाक जोर शोर व उपहास से ओतप्रोत थे। दुशां ने मोना लिसा की प्रतिकृति को

होठों पर मूँछ चित्रित करके प्रदर्शित किया व उसको शीर्षक दिया "हुक"। पिकाबिया ने एक चौखटे से खिलौने को बाहर रख दिया और उसको शीर्षक दिया "सेज़ान का व्यक्ति चित्र" इस प्रकार इन कलाकारों ने सौंदर्य की परम्परागत कल्पनाओं व आधुनिक कला के महान आदर्शों का उपहास किया — यही कारण था कि दादावाद बहुत ही कम समय तक जीवित रहा और दो साल के अन्दर ही एक नये आंदोलन का जन्म हुआ जिसमें दादा के बुद्धिवाद - विरोधी विचारों के साथ, मानव के अंतर्मन के आंतरिक रहस्यों को खोज का उद्देश्य प्रमुख रूप से सामने रखा गया यह था अतियथार्थवाद।

Unit III

Surrealism

Picabia

Marcel Duchamp

1. Salvar Dalí
2. John Micro

Unit IV

1. Mandrian
2. Kandinsky.

Scanned with CamScanner